साहित्य अकादमी के वेबलाइन परिसंवाद मे साहित्यकार प्रेमशंकर सिंह पर विमर्श

प्रातःकिरण,एसकेविकी

सहरसा साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा वेबलाइन श्रृंखला के अन्तर्गत मैथिली के साहित्यकार और प्राध्यापक रहे डॉ. प्रेमशंकर सिंह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर केन्द्रित एकदिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय के मैथिली विभागाध्यक्ष रहे डॉ. सिंह का विश्वविद्यालय में मैथिली भाषा के अध्यापन में व्यापक योगदान रहा है। साथ ही मैथिली साहित्य के विकासयात्रा में भी उनका सराहनीय योगदान रहा है। जूम पर आयोजित इस परिसंवाद के उद्घाटन सत्र में साहित्य अकादेमी के उप सचिव डॉ एन सुरेश बाबू ने स्वागत भाषण दिया। पुनः अध्यक्षीय सम्बोधन में मैथिली परामर्श मंडल के संयोजक, प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ उदय नारायण सिंह ने डॉ प्रेमशंकर सिंह के भाषायी योगदान को स्मरण करते हुए इस परिसंवाद आयोजन की सार्थकता को रेखांकित किया। शिक्षाविद डॉ केष्कर ठाकुर की अध्यक्षता में आयोजित प्रथम सत्र में भागलपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्राध्यापक डॉ शिव प्रसाद यादव ने विस्तारपूर्वक प्रेमशंकर सिंह के प्राध्यापकीय और साहित्यिक जीवन पर प्रकाश दिया। पुनः तिलकामांझी विश्वविद्यालय में मैथिली के वर्तमान विभागाध्यक्ष डॉ प्रमोद पाण्डेय और दरभंगा निवासी वरिष्ठ लेखक डॉ योगानन्द झा ने विषय केन्द्रित आलेख का पाठ किया। इस सत्र के अन्तिम वक्ता के रुप में डॉ सिंह के सुपुत्र प्रणव कुमार सिंह ने अपने पिता को याद करते हुए कई संस्मरण को पटल पर रखा। साहित्यकार लक्ष्मण झा सागर की अध्यक्षता में रोसड़ा महाविद्यालय के मैथिली विभाग में कार्यरत डॉ प्रवीण कुमार प्रभंजन ने प्रेमशंकर सिंह के नाट्यालोचना पर आलेख पाठ किया, तो स्नातकोत्तर केन्द्र , सहरसा में कार्यरत्त डॉ अरुण कुमार सिंह के द्वारा उनके आलोचना साहित्य पर विस्तृत विमर्श किया गया। रामकृष्ण महाविद्यालय, मधुबनी के डॉ अरविन्द कुमार सिंह झा ने विवेच्य व्यक्तित्व के शोधदृष्टि से सम्बोधित आलेख का पाठ किया। वेबिनार में कोलकाता से जुड़े लक्ष्मण झा सागर ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कई महत्वपूर्ण संस्मरण और उनके योगदान पर चर्चा की। परिसंवाद का समापन डॉ नचिकेता के समापन वक्तव्य और एन. सुरेश बाबू के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ। साहित्य अकादमी के द्वारा इस आयोजन की खासियत यह रही के इसमें मिथिला के विभिन्न क्षेत्र में रहने वाले वक्ताओं की भागीदारी रही, जो मैथिली भाषा-साहित्य के लिए सकारात्मक प्रयास है। वेबिनार के क्रम में प्रत्यक्ष प्रसारण देख रहे तिलकामांझी विश्वविद्यालय के डॉ. अमिताभ चक्रवर्त्ती, डॉ श्वेता भारती, मधेपुरा के डॉ. उपेन्द्र प्रसाद यादव, डॉ संजय वशिष्ठ, सुपौल से साहित्यकार केदार कानन, प्रसिद्ध साहित्यकार व मैथिली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ सुभाष चन्द्र यादव, कथाकार- समीक्षक आशीष चमन, सहरसा से किसलय कृष्ण, सत्यप्रकाश झा, सलीम सहगल, समस्तीपुर से डॉ भास्कर ज्योति आदि ने अकादेमी के इस आयोजन की सराहना की है।